शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह- जुलाई, 2022

अष्ठम वर्ष अंक -02

सफलता वहीं से शुरू होती है जहां असफलता पर काबू पाया जाता है !
(Success begins where failure is overcome)

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: सत्र की शुरुआत-90% विफलताओं से कैसे बचें

नया सत्र प्रारंभ हुए पन्द्रह दिन से अधिक बीत चुका है। आपके स्कूल में नामांकन करने वाले अधिकांश बच्चों ने प्रवेश ले लिया है। माह जुलाई से आपको बच्चों की पढ़ाई की सही तरीके से शुरुआत कर लेनी चाहिए। यदि शुरुआत में ही अपने बाजी नहीं मारी तो पूरे सत्र में आपको विफलताओं का सामना करना पड़ेगा। पूरे सत्र में सफलता का आनन्द लेने माह जुलाई में आपकी सक्रियता एवं रणनीति बहुत मायने रखती है। एक बार अपने अपने स्कूल में प्रधान अध्यापक एवं अन्य अध्यापकों, पालकों, शाला प्रबन्धन समिति एवं बच्चों एक बीच अपना सिक्का जमा लिया तो पूरे सत्र में आपको सफलतापूर्वक काम करने में कोई रुकावट नहीं आएगी और आपको हमेशा बेहतर परिणाम मिल सकेंगे।

सत्र की शुरुआत से निम्नलिखित बिन्दुओं पर अपना पूरा ध्यान लगाएं-

- आपने अरस्तू द्वारा कहे गए बरसों पुरानी कहावत "well begun is half done" जरूर सुना होगा। यदि शुरुआत अच्छी हो तो उसका मतलब आपका आधा कार्य पूरा !
- प्रतिदिन निर्धारित समय पर शाला आकर पूरे समय शाला में रहकर अपना अधिकतम समय बच्चों को सीखने हेतु सक्रिय करने में लगाएं (time on task)।
- बच्चों के पालकों से मिलने हेतु समय अवश्य निकालें एवं उन्हें उनके बच्चों की पढाई के बारे में अवगत करवाते हुए उन्हें नियमित स्कूल भेजने को प्रेरित करें।
- शासन से प्राप्त विभिन्न निर्देशों एवं कैलेण्डर को देखकर उसके अनुरूप अपनी शाला के लिए भी एक कैलेण्डर बनाकर उसके अनुसार अपने कार्यक्रम निर्धारित करें।
- पिछली कक्षा की दक्षताओं को एक बार अवश्य दुहरा लेवें और ऐसे बच्चे जो पीछे छूट रहे हैं उनके लिए उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था कर लेवें।
- आपको अपने क्षेत्र में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को सक्रिय करते हुए एक दूसरे से निरन्तर सीखने के लिए एक प्लेटफोर्म बनाकर स्वयं में सुधार करते रहना होगा।
- अपने संकुल के किसी स्कूल के साथ ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल कार्यक्रम के अंतर्गत संसाधन एवं अन्य सुविधाओं को साझा करने हेतु पंजीयन कर लेवें।
- बच्चों को एक दूसरे से सीखने के अवसर प्रदान करें एवं उन्हें इस कौशल में अभ्यस्त करें।
- शाला समय से बाहर भी बच्चों के सीखने हेतु समर्थन देने समुदाय से सहयोग लेवें।

एजेंडा दो: आपस में बेहतर तालमेल

ये एक सरल चित्र है, लेकिन बहुत ही गहरे अर्थ के साथ।

आदमी को पता नहीं है कि नीचे सांप है और महिला को नहीं पता है कि आदमी भी किसी पत्थर से दबा हुआ है।

महिला सोचती है: - 'मैं गिरने वाली हूं और मैं नहीं चढ़ सकती क्योंकि साँप मुझे काट रहा है।"

आदमी अधिक ताक़त का उपयोग करके मुझे ऊपर क्यों नहीं खींचता!

आदमी सोचता है:- "मैं बहुत दर्द में हूं फिर भी मैं आपको उतना ही खींच रहा हूँ जितना मैं कर सकता हूँ!

आप खुद कोशिश क्यों नहीं करती और कठिन चढ़ाई को पार कर लेती।

आदमी को ये नहीं पता है कि औरत को सांप काट रहा है।

नैतिकता- आप उस दबाव को देख नहीं सकते जो सामने वाला झेल रहा है, और ठीक उसी तरह सामने वाला भी उस दर्द को नहीं देख सकता जिसमें आप हैं।

यह जीवन है, भले ही यह काम, परिवार, भावनाओं, दोस्तों, के साथ हो, आपको एक-दूसरे को समझने की कोशिश करनी चाहिए, अलग-अलग सोचना, एक-दूसरे के बारे में सोचना और बेहतर तालमेल बिठाना चाहिए।

हर कोई अपने जीवन में अपनी लड़ाई लड़ रहा है और सबके अपने अपने दुख हैं। इसीलिए कम से कम जब हम अपनों से मिलते हैं तब एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप करने के बजाय एक दूसरे को प्यार, स्नेह और साथ रहने की खुशी का एहसास दें, जीवन की इस यात्रा को लड़ने की बजाय प्यार और भरोसे पर आसानी से पार किया जा सकता है...

नए सत्र की शुरुआत से आप अपने शाला, संकुल एवं विभाग के साथियों, अपने प्रधानाध्यापक, विद्यार्थियों एवं पालकों के साथ बेहतर संबंध स्थापित करने का प्रयास करें। एक दूसरे की भावनाओं को समझते हुए उनसे अच्छा व्यवहार करें।

एजेंडा तीन: अपनी कहानी सुनाएं और दस रूपए पाएं

कोविड के दौरान मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ा है और बहुत से लोग अकेलेपन एवं डिप्रेशन के शिकार हो रहे हैं। पुणे के कम्प्युटर इंजीनियरिंग के छात्र राज विनायक डगवार ने इस समस्या का एक अनूठा हल निकाला है। वे पुणे के फर्गुसन रोड में एक बोर्ड लेकर खड़े रहते हैं। जिन किसी को भी अपने मन की बात कहनी हो, अपनी समस्या किसी के साथ साझा करना हो, तो वे उनकी बात को ध्यान से सुनने तैयार रहते हैं। उनकी कहानी सुनने के बाद राज उन्हें दस रूपए भी टोकन स्वरूप देते हैं पर अधिकांश लोग उन्हें अपनी कहानी सुनने के लिए धन्यवाद देते हैं और दस रूपए लेने से मना कर देते हैं। कुछ वर्षों पूर्व राज्य स्वयं अवसाद में चले गए थे और वह अपनी समस्या अपने पालकों को भी बता नहीं पा रहे हैं। उन्हें डर था कि उनके पालक उसकी समस्या को समझ नही पाएंगे। बहुत मुश्किल से उन्हें इस परेशानी से छुटकारा मिला। तब उन्हें यह आइडिया आया कि यदि कोई किसी की समस्या को बिना जजमेंटल हुए सुनने का प्रयास करता है तो सुनाने वाला अपने आपको बहुत हल्का महसूस करने लगता है।

आप क्या सोच रहे हैं ? क्या आपके आसपास भी ऐसे बच्चे या लोग नहीं है जो किसी प्रकार की मानसिक समस्या को झेल रहे हैं ? क्या उनकी समस्या को शांति से सुनने से उन्हें मदद मिल सकती है ? क्या आप इन मुद्दों के लिए अपनी एक टीम बना सकते हैं ?

एजेंडा चार: पालकों से मिलना बेहद आवश्यक

आपके पास पालक अपने बच्चों को आप पर विश्वास करते हुए चार घंटों से अधिक समय के लिए भेजते हैं। उन्हें उम्मीद होती है कि आप उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा देंगे और एक अच्छे नागरिक बनने में पूरा सहयोग देंगे। घर से शाला आते एवं वापस जाते समय अपना कुछ समय रास्ते में पालकों से मिलने के लिए निकालने का प्रयास करें। कभी-कभी उनके कार्यस्थल या खेत में भी जाकर मिलना चाहिए। उनके सुख-दुःख के समय भी सहभागी बनने का प्रयास करें।

पालकों को अपने बच्चों के बारे में अच्छा सुनना बहुत अच्छा लगता है। पालकों को उनके बच्चों की अच्छी बातें सुनाकर फिर उनसे बच्चों में सुधार हेतु आपकी अपेक्षाओं के बारे में भी सूचित करें। बच्चों को घर पर पढ़ने का उचित वातावरण एवं स्थान, स्कूल में हो रही पढ़ाई के बारे में जानकारी लेते रहने एवं बच्चों की कापी पुस्तक आदि समय-समय पर देखते रहने हेतु भी पालकों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करें। समय समय पर ऐसा करने से पालकों एवं समुदाय का आप पर विश्वास बढ़ेगा और आप उनकी ओर से भी बच्चों की पढ़ाई में सहयोग ले सकेंगे।

एजेंडा पांच: बच्चों द्वारा स्वतंत्र कहानी लेखन (शिक्षकों के आलेख)

बच्चे कहानी सुनना- सुनाना पसंद करते हैं। उनकी इस रुचि का उपयोग भाषाई कौशल के विकास के लिए किया जाए, तो वे अपेक्षाकृत जल्दी सीख सकेंगे। इसके लिए सबसे पहले बच्चों को कक्षा में सहज होना जरूरी है ताकि वे बिना किसी झिझक के, खुल कर बोल सके, अपनी बात रख सके। चर्चा पत्र में जब बच्चों की लिखी कहानी को संकलित कर एक पुस्तिका बनाने का आइडिया साझा किया गया, तब मैंने अपने कक्षा में इसे आजमाने का प्रयास किया।

मैंने पहले बच्चों को अपने मन से कोई घटना या कहानी सुनाने का अवसर दिया। कुछ नें बढ़िया कहानी सुनाई कुछ को कहानी सुनाने में हिचक महसूस हुई। अधिकांश ने सुनी सुनाई पोपुलर कहानियों को सुनाने का प्रयास किया। शेर चूहा, सोने का अंडा देने वाली मुर्गी, कछुआ खरगोश, चालाक लोमड़ी के चक्कर से वे बाहर नहीं निकल पा रहे थे। मैंने उनकी हिचक को दूर करने का प्रयास करते हुए अगले चरण में अपने आसपास दादा-दादी नाना-नानी द्वारा सुनाई गयी कहानियों को याद करने का मौका दिया। उन्हें अपने मन से अपने अनुभव से कुछ कहानियाँ बनाने के बारे में भी प्रेरित किया।

जब बच्चे कल्पना से कहानियां गढ़ने लगे तब मैंने उन्हें कोरे कागज़ देकर कहानियां लिखने का मौका दिया। बच्चों ने अपने मन से अलग अलग प्रकार की कहानियाँ लिखीं। उसमें व्याकरण एवं मात्राओं की गलतियां अवश्य थी पर उनकी लिखी कहानियों के भाव समझ में आ रहे थे। मैंने सभी को अच्छी अच्छी कहानियाँ लिखने के लिए बधाई दी और उनकी बहुत तारीफ़ की। मेरी योजना है कि ऐसा और कुछ बार करते हुए उनके द्वारा उनके अनुभवों के आधार पर लिखी मौलिक रचनाओं का संग्रह कर उन्हें एक पुस्तक का रूप देकर प्रत्येक कहानी के साथ उससे संबंधित चित्र आदि बनवाकर इस प्रकार से तैयार पुस्तकों को अपने पुस्तकालय में रखूँ।

यदि आप भी अपनी एक टीम बनाकर इस प्रकार के कार्य करने को तैयार हों तो पूरी टीम का विवरण, उनका पता एवं मोबाइल नंबर देते हुए हमें charchapatra@gmail.com पर भेजें। आपके द्वारा इस प्रकार बच्चों से लिखवाकर कहानियों की पुस्तक तैयार करने संबंधी प्रोजेक्ट का कार्य आपकी टीम को देते हुए हम चयनित पुस्तकों को हमारी मुस्कान पुस्तकालयों में देने हेतु विचार कर सकते हैं।

श्रीमती सत्या कौशिक, सहा. शिक्षक, शासकीय प्राथमिक कन्या शाला टेमर, विकासखण्ड-सक्ति, जिला- जांजगीर – चाम्पा (6263243046)

आगामी अंक के लिए पुनः आपको यही कार्य दिया जा रहा है। माह जून 2022 का अंक देखें। बच्चों को कक्षा में कहानी लिखने का अवसर देने हेतु भूमिका तैयार करें। फिर उनसे मौलिक कहानी लिखवाकर राज्य के सभी स्कूलों में मुस्कान पुस्तकालय में उपयोग में लाए जाने हेतु प्रस्तावित करें। बच्चों द्वारा लिखित मौलिक कहानियों की पुस्तकों को मुस्कान पुस्तकालय के लिए प्रस्तावित किया जा सकेगा।

एजेंडा छह: मांग पर प्रशिक्षण (Training on Demand)

इस सत्र में विकासखंड स्तर पर प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से शिक्षकों को उनकी मांग के आधार पर प्रशिक्षण देने की योजना है। इसके अंतर्गत विकासखंड स्तर पर विभिन्न प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी अपने अपने क्षेत्र में प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान (training need assessment) करते हुए उनमें से चयनित मुद्दों पर शिक्षकों की मांग के आधार पर उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाएगी। प्रत्येक शिक्षक को कम से कम पचास घंटे के प्रशिक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित करना होगा। कुछ क्षेत्र जिनमें प्रशिक्षण दिया जा सकता है, वे हैं-

- स्थानीय भाषा में छोटी कक्षाओं के बच्चों को सीखने में सहयोग देना
- बच्चों के पठन कौशल विकसित किए जाने हेतु गतिविधियाँ एवं अभ्यास सामग्री विकास
- गणित के मूलभूत अवधारणाओं को आसानी से स्पष्ट करने/ समझाने हेतु गतिविधियाँ
- बच्चों को एक दूसरे से सीखने हेतु पीयर लर्निंग प्रविधि को लागू करना
- शिक्षकों की अनुपस्थिति में बच्चों के समूह द्वारा स्वयं मिलकर सीखने हेतु गतिविधि बैंक
- सामुदायिक सहभागिता लेने हेतु शाला प्रबंधन समिति का निरंतर क्षमता विकास
- विज्ञान के प्रयोगों को आसानी से कर पाने हेतु बच्चों को तैयार करना

सभी विकासखंड इसके लिए तैयारी करते हुए प्रशिक्षण की विस्तृत योजना बना लेवें।

एजेंडा सात: ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल

एक संकुल की दो शालाओं के बीच जोड़ी बनाकर संसाधनों के बेहतर साझेदारी हेतु ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल कार्यक्रम लाया गया है। आप अपने संकुल की किसी शाला से पहले जोड़ी बनाने हेतु मौखिक सहमति प्राप्त कर लेवें। फिर http://www.ssachhattisgarh.gov.in/ लिंक में जाकर यूनिफार्म एवं बुक डिस्ट्रीब्यूशन में क्लिक करें। यहाँ स्कूल लोगिन करने पर आपको Twin लिखा दिखाई देगा। इसको क्लिक करते ही आपको अपने cluster के अंतर्गत आने वाले सभी शालाओं की सूची दिखाई देगी। Twining of school में आप अपने cluster के अंतर्गत आने वाले शाला को ही twining कर pair बना सकते है। चूँकि इस बार ऑनलाइन अपना pair शाला चुनना है इसलिए पहले आओ पहले पाओ वाला नियम काम करेगा। अर्थात यदि कोई अ शाला अपने cluster के अन्दर आने वाले ब , स , द शाला में से किसी एक शाला द को सेलेक्ट करता है , तो दोनों शाला एक दूसरे से twin हो जाएंगे। लेकिन इसमें एक समस्या है। यदि द शाला को अ शाला के साथ twining नहीं करना है, तो आप चाह कर भी हट नहीं सकते क्योंकि आपको अ शाला पहले आओ पहले पाओ के अंतर्गत आपका चयन कर लिया है। इसके अलावा ट्विनिंग में आपको निजी स्कूलों के साथ ट्विनिंग करने को प्राथमिकता देनी है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत जल्दी से जल्दी आप किसी न किसी स्कूल के साथ जोड़ी बना लेवें। ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल कार्यक्रम के अंतर्गत तैयार विस्तृत दिशानिर्देश आपको शीघ्र टेलीग्राम के अकादमिक चेनल में उपलब्ध करवाए जाएँगे। अतः सभी शिक्षक https://t.me/CGSAMAGRASHIKSHAACADEMICINFO से शीघ्र जुड़ें।

एजेंडा आठ: आंगनबाडी और स्कूल के बीच बेहतर समन्वय

राज्य में चुनिन्दा आंगनबाड़ियों को निकट के प्राथमिक शालाओं के साथ द्विन करवाया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है ताकि बच्चों को छोटी उम्र में ही सीखने के पर्याप्त अवसर मिल सके। शोध से यह सिद्ध हो गया है कि हमारे मस्तिष्क का अधिकतम विकास पांच आयु वर्ग तक हो जाता है। हम इस आयु वर्ग में बच्चों को नई नई चीजें सीखने के अवसर नहीं दे पाते। जबकि यही वो उम्र है जब बच्चे बहुत जल्दी नई-नई चीजें सीख लेते हैं। आपको भी अपनी कक्षा पहली में सीखे-सिखाए बच्चे मिलें इसके लिए थोड़ा समय अपने आसपास के आंगनबाड़ियों में व्यतीत करना चाहिए। आंगनबाडी में बच्चों को सीखने के पर्याप्त अवसर प्रदान करने अपने आंगनबाडी दीदी से मिलकर उनकी मेंटरिंग करें। अंगना म शिक्षा के स्मार्ट माताओं को आंगनबाडी में पढने वाले बच्चों को समय निकालकर नई बातें सिखाने की जिम्मेदारी लेने हेतु प्रेरित करें। समुदाय से भी इस आयुवर्ग के बच्चों को सीखने में सहयोग करने की अपील करें।

यकीन मानिए ऐसा करने से आपको कक्षा पहली में पहले की तुलना में कहीं होशियार बच्चे मिलेंगे !!

एजेंडा नौ: शिक्षक अनुपस्थिति में बच्चों की पियर लर्निंग

शासन द्वारा नए सत्र में शिक्षकों का अधिक से अधिक समय बच्चों को सीखने में सक्रिय रखने हेतु लगाने निर्देशित किया है। इस हेतु सभी शिक्षकों को अपने time on task पर जोर देना होगा। time on task का मतलब है शिक्षकों का मुख्य काम पढ़ाना लिखाना है तो उन्हें अपना अधिकतम समय अपने मूल काम पढ़ाने लिखाने में बच्चों को सक्रिय रखने हेतु करना है। यह देखा जा रहा है कि शिक्षकों को अपने मूल काम के अलावा बाकी सब काम करने पड़ते हैं। ऐसे में बच्चों को पढ़ाना पीछे रह जाता है।

चाहें कितनी भी कोशिश कर लें, किसी न किसी काम के लिए शिक्षकों को पढ़ाना छोड़ कर कुछ और काम करने ही पड़ते हैं। ऐसे में यदि उनके पास एक ऐसा गतिविधि बैंक हो जिसमें उनकी अनुपस्थिति में भी बच्चे पियर लर्निंग के माध्यम से आपस में गतिविधियाँ करते हुए सीखना जारी रख सकें तो शिक्षक अनुपस्थिति से होने वाला नुकसान कुछ हद तक कम हो सकेगा। आपमें से बहुत से संवेदनशील शिक्षक ऐसा अवश्य करते होंगे। आपके पास बच्चों को ऐसे समय में सक्रिय रखने के बहुत से आइडियाज होंगे। क्यों न हम सब मिलकर ऐसी कुछ गतिविधियों को जिन्हें हम सत्र के अलग-अलग समय मे हमारी कक्षाओं में उपयोग में ला सकें, का आपस में संग्रह कर शिक्षकों के उपयोग के लिए साझा करें। अपने आइडियाज आप हमें charchapatra@gmail.com पर भेज सकते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

1. शिक्षक कक्षा में बच्चों को दो-दो सदनों में बाँट लेवें। जब भी शिक्षक अनुपस्थित रहें, बच्चे दो सदनों में बंटकर एक दूसरे सदन को पिछले दिनों में सिखाए गए मुद्दों पर प्रश्नोत्तर करने का अवसर देवें। एक सदन से कोई बच्चा प्रश्न पूछे और दूसरे सदन के बच्चे उन प्रश्नों के उत्तर दें। ऐसा करने से सीखे हुए मुद्दों की पुनरावृत्ति हो सकेगी। सभी को अवसर देवें।
2. बच्चों को आपकी अनुपस्थिति में किए जाने योग्य गतिविधियों के कार्ड बनाकर एक कार्नर में रखें। बच्चे अपनी मर्जी से इनमें से कार्ड उठाकर उसमें उल्लिखित गतिविधि को करते हुए अपना समय सीखने में व्यतीत कर सकेंगे। जैसे पुस्तक में पुष्प की आंतरिक संरचना का चित्र या किसी भी चित्र को ध्यान से देखें और समझें। अब सब पुस्तक बंद कर लेवें। अपनी कापी में देखे हुए चित्र को बनाएं एवं नामकरण करें। अब पुस्तक खोलकर स्वयं मिलान करें। छूटे हुए या गलत हुए चीज को सुधारें। आप अपनी कापी अदल बदल कर भी एक दूसरे की जाँच कर सकते हैं।

एजेंडा दस: नवीन सत्र में लागू करने योग्य कुछ नवाचारी मोडल

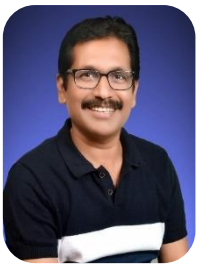

श्री सतीश स्वरूप पटेल (8120307008), संकुल समन्वयक, महासमुंद, द्वारा जिले में NAS की तैयारी के लिए जिला नोडल के रूप में कार्य किया। उन्होंने राज्य से प्राप्त अभ्यास पुस्तिकाओं, कक्षावार माडल प्रश्नपत्रों को समय पर सभी शालाओं में पहुंचाते हुए उनपर सभी बच्चों द्वारा कार्य, शिक्षकों द्वारा बच्चों के कार्यों पर सुधारातम फीडबैक, स भी बच्चों द्वारा शत-प्रतिशत प्रश्नों को हल करना, OMR sheet को सही तरीके से भर पाना, पूरे कार्यक्रम की निर्नात्र मानिटरिंग आदि को पूरी जिम्मेदारी के साथ पूरा किया। उनके इन प्रयासों से महासमुंद पूरे राज्य में NAS में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वर्तमान में वे दो साल आगे के लिए अभी से प्लान कर रहे हैं।

श्री सूर्यकांत बैरागी (9691642330) डाईट, नगरी, जिला धमतरी द्वारा असर सर्वे में जमीनी स्तर पर सुधार हेतु एवं राज्य में धमतरी को प्रथम स्थान दिलवाने हेतु बहुत काम किया। उन्होंने जिले के सभी संकुल समन्वयकों एवं डाईट संकाय को शामिल कर सभी शिक्षकों से जीवंत संपर्क बनाए रखा। उन्हें मालूम था कि असर सर्वे गाँवों में होता है और सेम्पल के रूप में घर लिए ज़ाते हैं। बच्चे चाहें स्कूल जाए या न जाएँ, उनको सेम्पल के रूप में लिया जाता है। इसलिए उन्होंने समुदाय के साथ बच्चों के नियमित शाला जाने एवं शाला से बाहर बच्चों को शाला में प्रवेश दिलवाने एवं मूलभूत भाषाई /गणितीय कौशलों पर फोकस कर काम किया।

श्री धरमदास मानिकपुरी (8959865999) शिक्षक, जांजगीर-चांपा द्वारा शाला त्यागी एवं शाला से बाहर के बच्चों को शाला में वापस लाने हेतु विशेष प्रयास किया। उन्होंने इस समस्या को दूर करने पालकों के साथ जन-जागरूकता अभियान चलाया। समुदाय के साथ मिलकर जन-चौपाल लगाकर इस समस्या से मुक्ति पाने हेतु विशेष कार्यक्रमों का संचालन किया। उन्होंने बच्चों को शाला परिसर में खेलने का अवसर दिया और फिर धीरे-धीरे स्कूल के प्रति रूचि विकसित कर उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ा। हमें बच्चों की क्षमता के अनुसार इन माह या छह माह का आवसीय/ गैर-आवासीय पाठ्यक्रम चलाए जाने की तैयारी कर सभी को आयु अनुरूप कक्षा में शामिल करवाया जाना है।

श्रीमती निधि जैन (7000593877), शिक्षिका, जिला दुर्ग द्वारा अपनी शाला में एक कक्ष को FLN कक्ष के रूप में विकसित किया है। इस कक्ष में उन्होंने बच्चों की पहुंच में उपयोग हेतु भाषा एवं गणित की सामग्री तैयार कर चारों ओर प्रदर्शित कर अपनी कक्षा में सीखने के लिए एक बेहतर वातावरण बनाए जाने का प्रयास किया है। उनके अनुसार सभी प्राथमिक शालाओं में बच्चों के लिए एक FLN कक्ष होना चाहिए। उन्होंने सभी बच्चों को FLN में दक्ष करने के बाद जिले में अधिकारियों को बच्चों के आकलन की चुनौती दी और उनकी चुनौती को स्वीकार कर जिले के DMC ने शाला में पहुंच कर बच्चों की जांच कर उनको "हमारे नायक" के लिए प्रस्तावित किया।

श्रीमती दीप्ति दीक्षित (9752286824) शिक्षिका, बिलासपुर द्वारा खिलौनों का उपयोग कर छोटी कक्षाओं में सिखाने की दिशा में बहुत उत्कृष्ट काम किया है। उन्होंने बच्चों के सीखने में खिलौनों के महत्व को देखते हुए अपनी कक्षा में खिलौना कार्नर की स्थापना की। कुछ खिलौने उन्होंने स्वयं बनाए, कुछ को बनाने में उन्होंने बच्चों का सहयोग किया एवं कुछ को समुदाय के सहयोग से बाजार से मंगवाकर उपलब्ध करवाया। सभी खिलौनों को अपनी कक्षा में एक खुले कार्नर में बच्चों की पहुंच में रखकर बच्चों को खेलने हेतु उपलब्ध करवाया। उनके अनुसार सभी छोटी कक्षाओं में अध्यापन करने वाले शिक्षकों को toy pedagogy का ज्ञान होना चाहिए और कक्षाओं में शिक्षक निर्मित सीखने में सहायक खिलौने उपलब्ध होने चाहिए।

सुश्री हेमकल्याणी सिन्हा (9575747713) शिक्षिका, बेमेतरा द्वारा दिव्यांग होने के बावजूद न केवल अपने स्कूल में वरन पूरे राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत से नवाचार कर रही हैं। अपनी कक्षा में बच्चों द्वारा अभ्यास की कमी को देखकर इसे FLN की प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा मानते हुए बच्चों को स्लेट पेन्सिल प्रदान किया। उन्होंने पाया कि पालक बच्चों के लिए एक बार कापी पेन खरीद कर देते हैं। उन्हें यह कापी पूरे वर्ष भर चलाना पड़ता है। स्लेट में उनके द्वारा बच्चों के लिए बहुत से अभ्यास करवाए जाते हैं और उनके कार्यों का नियमित आकलन किया जाता है। उनका मानना है कि कक्षाओं में स्लेट का प्रयोग वापस शुरू होना चाहिए।

श्रीमति प्रमिला कुशवाहा (7587150063) शिक्षिका सरगुजा द्वारा अपनी कक्षा में FLN सीखने में सहयोग के लिए पॉकेट बोर्ड का नियमित उपयोग किया जाता है। खादी के थान का उपयोग कर वे स्वयं पॉकेट बोर्ड निर्मित करती हैं। इस पॉकेट बोर्ड के माध्यम से गणित एवं भाषा सिखाने चार्ट पेपर को एक निश्चित साइज में काटकर फ्लेश कार्ड बनाया जाता है। इस फ्लेश कार्ड में भर्रू एवं स्याही से बड़े आकार में सिखाने वाली बातें लिखी जाती हैं। बच्चे इस पॉकेट बोर्ड के माध्यम से बहुत सारी गतिविधियाँ आयोजित कर सकते हैं। उन्होंने पॉकेट बोर्ड बनाने का वीडियो भी शिक्षकों के लिए बनाया है। सभी शालाओं में पॉकेट बोर्ड बनाकर FLN हेतु उपयोग किया जाना अनिवार्य है।

श्रीमती चित्रमाला राठी (7898628151), शिक्षिका, बालोद ने प्रिंट-रिच वातावरण के महत्व को समझ कर उस पर बहुत अच्छा प्रयास किया। अपने शाला में सभी कक्षा की दीवारों पर उन्होने बच्चों को सीखने के लिए लर्निंग आउटकम के आधार पर प्रिंट सामग्री उपलब्ध करवाई। उदाहरण के लिए गणित में जोड़ सीखने हेतु एक कोना, पहाडा सीखने के लिए अलग कोना, बड़ा-छोटा जैसे विभिन्न अवधारणाओं को सीखने हेतु व्यवस्था की। उनका मानना है कि बच्चों को प्रिंट-रिच वातावरण उपलब्ध करवाने से शिक्षकों के अन्य कार्यों में व्यस्त रहने या अनुपस्थित होने के दौरान बच्चे peer learning का उपयोग कर एक दूसरे के साथ मिलकर सीखने का प्रयास करते हैं।

श्री कैलाश मंडावी (9752301922), कबीरधाम ने गणित को रोचक बनाकर सीखने में सहयोग देने हेतु बहुत सारी सामग्री उपलब्ध कराई है। उन्होंने ये सामग्री पूरे शौक से बनाई है और उन्हें क क्षा में गणित कार्नर में इन सामग्री को बच्चों के पहुंच में उपलब्ध करवाया है। वे गणित के विभिन्न अवधारणाओं को समझाने के लिए इन सहायक सामग्री का उपयोग करते हैं। उन्हें इस बात का पूरा विश्वास है कि प्रत्येक TLM से वे बच्चों में अपेक्षित कौशल विकसित करवाते हुए उनके उपलब्धि में सुधार करवाने में सफल हो सकते हैं। वे सभी शिक्षकों से गणित के भय को दूर करने TLM का उपयोग कर सिखाने में विश्वास करते हैं।

श्रीमती संतोषी डडसेना (8224910175) शिक्षिका, जिला जशपुर द्वारा बालवाडी के संचालन की दिशा में बहुत उम्दा कार्य किया है। प्राथमिक शाला में रहते हुए उन्होंने अपने गाँव में सभी बच्चों का आंगनबाडी में प्रवेश करवाते हुए छोटी उम्र में अधिक से अधिक सीख सकने की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए रोचक कहानियों एवं गीत-कविताओं के माध्यम से बच्चों को नाच-गाने एवं खेल-कूद के माध्यम से सिखाने का प्रयास किया। सभी जिलों में बच्चों के लिए स्थानीय भाषा में संकलित गीत-कविता-कहानियों को सोशियल मीडिया से लेकर उनका उपयोग वे अपनी कक्षाओं में करने वाली हैं। इन गीत-कविता-कहानियों को वे टीम की मदद से ऑडियो वीडियो फोर्मेट में भी बनवाना चाहती हैं ताकि भाषा न जानने वाले शिक्षक भी इसका उपयोग कर सकें।

श्री चित्रसेन पटेल (9993801285) शिक्षक, गरियाबंद द्वारा अपने शाला प्रबंध समिति के सदस्यों को एक्टिव करते हुए उन्हें सम्मान एवं महत्व देते हुए शाला में बच्चों की गुणवत्ता सुधार की दिशा में बहुत बढ़िया कार्य किया। उन्होने शाला प्रबन्धन समिति के स हयोग से विगत सत्र में पांच माह से अधिक संध्याकालीन कक्षाओं का संचालन किया। बच्चों को रोचक तरीकों से सीखने में सहयोग करने से बच्चे इन कक्षाओं में नियमित आने लगे और संध्याकालीन कक्षाओं से बहुत कुछ सीख कर उपलब्धि में सुधार लाने में सफलता हासिल की।

श्रीमती रानू भट्ट (7987089673) बलौदाबाजार जिले में महिला शिक्षिकाओं द्वारा संचालित अंगना म शिक्षा कार्यक्रम में बहुत अच्छा कार्य करने हेतु स्मार्ट माता के रूप में चयन किया गया है। अपने आपको स्मार्ट माता के रूप में चयनित होने से वे बहुत खुश हैं। उनका स्वयं का बच्चा भी वहीं पढ़ता है। उनके अनुसार सभी स्मार्ट माताओं को अपने निकट के आंगनबाडी में जाकर छोटे बच्चों को सीखने में सहयोग देना चाहिए। रानू भट्ट स्वयं समय निकालकर प्राथमिक शाला एवं आंगनबाडी में जाकर शिक्षकों एवं बच्चों से छत्तीसगढ़ी में बात कर उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग करती हैं।

श्री राजेन्द्र कुमार देवांगन (7354514925) विकासखंड शिक्षा अधिकारी, मोहला विकासखंड जिला राजनांदगांव द्वारा सामुदायिक सहभागिता की एक मिसाल कायम की है। उन्होंने अपने विकासखंड के एक शिक्षक राजकुमार यादव, प्राथमिक शाला सोमाटोला से स्मार्ट टीवी की परिकल्पना समझी। उन्होंने जन-प्रतिनिधियों, विधायक निधि, समुदाय से चंदा एवं शिक्षकों से योगदान लेकर कुछ ही महीनों में अपने विकासखंड के समस्त शालाओं में स्मार्ट टीवी उपलब्ध करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके विकासखंड के सभी 280 शालाओं में बिना किसी शासकीय सहयोग से स्मार्ट टीवी स्थापित कर बच्चों को उनका उपयोग कर सीखने में सहयोग लिया जा रहा है।

श्री रविशंकर सारथी (9977249803) शिक्षक, रायगढ़ ने बच्चों के पठन कौशल के विकास हेतु जिला नोडल अधिकारी की जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाई। राज्य नोडल अधिकारी श्रीमती संजना, दुर्ग द्वारा उन्हें रायगढ़ का जिला नोडल बनाया था। श्री रविशंकर ने रायगढ़ के सभी विकासखंडों एवं संकुलों में पठन कौशल विकास हेतु विकासखंड एवं संकुल स्तरीय नोडल अधिकारी का चयन कर उन्हें जिम्मेदारी देते हुए बच्चों के रीडिंग स्पीड एवं समझ को विकसित करने हेतु सौ दिन सौ कहानियों का सफलतापूर्वक संचालन किया

श्री विश्वमोहन मिश्रा (9340362146), प्रधान पाठक, बस्तर जिला विज्ञान को घर की रसोई का उपयोग कर सिखाने की दिशा में बहुत गहराई से काम कर रहे हैं। उनेक अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर की कोई भी अवधारणा ऐसी नहीं है जिसे किचन में उपलब्ध सामग्री का उपयोग कर सिखाया न जा सके। उनके द्वारा बच्चों के समक्ष रखे जा रहे कुछ समस्याएं - जैसे पूरियां तलने पर फूलती क्यों हैं/ एलपीजी गैस सिलेंडर कैसे काम करता है/ रसोई में प्रयोग में आने वाले अम्ल क्षार और लवण कौन-कौन से होते हैं/ फ्रीज में रखी बोतल को बाहर निकाल कर रखने पर उसकी बाहरी सतह पर पानी क्यों जम जाता है जैसे बहुत से सवालों पर बच्चों को सक्रिय रखकर सीखने में सहयोग दिया जाता है।

श्रीमति वन्दिता शर्मा (9617812541), शिक्षिका, मुंगेली द्वारा पीछे छूट रहे बच्चों के साथ उपचारात्मक शिक्षण में बहुत बढ़िया कार्य किया जा रहा है। उनके द्वारा ऐसे बच्चों की पहचान की जाती है। ऐसे बच्चों के साथ वे अलग से समय निकालकर काम करना पसंद करती हैं। इन बच्चों को कुछ अलग तरीके से सिखाते हुए बच्चों की उपलब्धि में सुधार लाने की दिशा में कार्य करना चाहती हैं। वन्दिता शर्मा जी ऐसे बच्चों को वैदिक गणित सिखाते हुए कठिन से कठिन सवालों को उनके द्वारा बहुत आसानी से करते हुए देखकर बहुत खुशी महूसस करती हैं। सभी शिक्षकों को इस सत्र में अपने तरीकों का उपयोग कर बच्चों में हुए लर्निंग लोस को दूर करने हेतु विभिन्न नवाचारी तरीकों से उपचारात्मक शिक्षण कार्यक्रम को कक्षाओं में लागू करना होगा।

श्री श्रीनिवास एटला (6267594355) संकुल समन्वयक, बीजापुर चर्चा पत्र को स्कूली शिक्षा में परिवर्तन लाने का एक उत्तम हथियार मानते हैं। विगत आठ वर्षों से उन्हें नियमित रूप से प्रत्येक माह एक तारीख को चर्चा पत्र सोशियल मीडिया के माध्यम से मिलता है। इसमें दिए गए दस एजेंडा को वे मासिक बैठकों में अपने शिक्षकों के साथ चर्चा करते हैं। उन्हें इन्हें अपनी शालाओं में आयोजित करने हेतु प्रेरित करते हैं। फिर माह में अलग अलग दिन विभिन्न शालाओं में जाकर यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके संकुल की शालाओं में शिक्षकों ने एजेंडा अनुसार काम किया है अथवा नहीं। हाल ही में उन्होंने चर्चा पत्र में सुझाए गए कहानी उत्सव को समुदाय के बड़े-बुजुर्गों का सहयोग लेकर आयोजित किया है।

श्री भूपेंद्र कुमार श्रीवास (6263 674 727), संकुल समन्वयक, बारसुर विकास खण्ड गीदम, जिला -दंतेवाड़ा द्वारा अपने संकुल में कक्षा तीन से पांच के बच्चों हेतु सरल उपचारात्मक कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाया गया। इन बच्चों का सर्वप्रथम असर टूल के उपयोग से बुनियादी भाषा और गणित का आकलन करते हुए उनके स्तर के अनुरूप तीन 1. लाल घर (प्रारंभिक+अक्षर/अंक) 2.नीला घर(शब्द+अनुच्छेद, संख्या) 3.हरा घर(कहानी,घटाव+भाग)। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रत्येक बच्चे की प्रगति की ट्रेकिंग रखी गयी और सभी को हरे घर तक पहुँचाने हेतु विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करवाया गया।

श्रीमती स्वाति कश्यप (9685162661), तखतपुर जिला बिलासपुर द्वारा बच्चों के साथ FLN पर बहुत अच्छा कार्य किया गया है। राज्य द्वारा संचालित सौ दिवसीय अर्थात चौदह सप्ताह के कार्य्रकम को पूरी गंभीरता एवं अनुशासन के साथ अपनी कक्षा में लागू करते हुए सभी बच्चों में FLN की दक्षताओं की प्राप्ति इस चौदह सप्ताह के दौरान करने का लक्ष्य प्राप्त किया। उन्होंने बच्चों को FLN में दक्ष करने हेतु अपनी शाला में एक FLN कक्ष का निर्माण किया जिसमें भाषा एवं गणित के ढेर सारे सहायक सामग्री को बच्चों के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाया।

हमें तलाश है ऐसे चेहरों की जो अपने अपने क्षेत्र में	• प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के सहयोग से अपने विकासखंडों में मांग पर आधारित प्रशिक्षण (training on demand) सिस्टम लागू कर सके। • जिले से लेकर संकुल तक अपने अपने क्षेत्र में उच्च प्राथमिक स्तर पर "सौ दिन सौ कहानियाँ" कार्यक्रम के लिए आने अन्य शिक्षक साथियों के मेंटर बनकर उन्हें मार्गदर्शन दे सके एवं कार्यक्रम की निरंतर मानिटरिंग कर सके। • "तिथि भोजन का आयोजन " जिसमें मध्याह्न भोजन के साथ समुदाय से किसी सदस्य द्वारा उनके लिए महत्वपूर्ण दिवस जिसे किसी का जन्मदिन, सालगिरह, पुण्यतिथि या किसी की याद में कुछ अतिरिक्त पोषक भोजन उपलब्ध करवाते हुए सहयोग करें। • शिक्षकों को बड़े प्रभावी तरीके से शिक्षक डायरी लिखवाते हुए कक्षा शिक्षण एवं निरीक्षण प्रक्रिया को इससे जोड़कर उपलब्धि सुधारने की दिशा में ठोस कार्य करें। • माइक्रो-इनिशिएटिव के तहत चर्चा पत्र के बेहतर उपयोग की दिशा में कार्य करने हेतु रणनीति बनाकर कार्यक्रम प्रारंभ करें। • प्राथमिक शाला और आंगनबाडी में बेहतर समन्वय स्थापित करना।